यूँ ही, एक दिन...

(१)

बेटा, स्कूल जाने के लिए जल्दी से तैयार हो जाना,
सत्तू घोल के रखा है गिलास में, उसे ज़रूर पी लेना।
दीदी लौटेगी तो उससे कहना कपडे पक्का धो लेगी,
मैं शाम तक आती हूँ कालोनी से बासन मांज कर।

पांच रुपये भगवान् के आले ले में रखे हैं, ले लेना,
स्कूल की छुट्टी होने पर ककड़ी और समोसा खा लेना।
पापा दोपहर को पीकर आएंगे तो उनसे मत उलझना,
मैं शाम तक आती हूँ कालोनी से बासन मांज कर।

डेरी वाले भैया से गोबर लाना है आज कंडों के लिए,
परचून वाले लाला का उधार भी चुकाना है इस माह।
ट्यूशन की फीस कब भरनी है, मझली से पूछना है,
और मेमसाब छुट्टी देंगी तो दांत का दर्द भी दिखाना है।

(२)

हड्डियां बता रहीं हैं की मुर्गा बना था कल रात भुना हुआ,
सूखे हुए गिलास की बू, उजागर कर रही साथ पिया ड्रिंक।
इतनी सारी प्लेटें, छिलके पिस्तों के, और बचे-कुचे काजू,
बयां कर रहे ये सब खुलकर, कल रात की पार्टी का मंज़र।

प्लेटों में फिंके खाने से निकलती निर्लज्जता की सड़ांध और,
कोलेस्टेरॉल पर चर्चा का मज़ाक उड़ाती कढ़ाई की चिकनाहट।
सूखे, बिखरे, डेज़र्ट चम्मचों से चिपके सीरे पर मदहोश चींटियां,
ज़रुरत से ज़्यादा कटे साग-सलाद के सिकुड़े-मुरझाये पत्ते।

करछियां, चिमटें, बर्तन-भांडों का जमावड़ा दे रहा है अंदाज़,
दो स्टार्टर, तीन सब्ज़ियां, तन्दूरी मुर्गा, और शायद चीनी सूप।
कॉफी मग भी धरे हैं धोने को, सूखे झाग की भूरी कोर लिए,
केसर इलाइची की ख़ुशबू भी आ रही डेगची की तलहटी से।

(३)

जल्दी से बर्तन मांज ले माया, फिर बाद में पोंछा मार लेना,
और पिछले हफ्ते बेमतलब का नागा क्यों किया था तूने?
इस महीने तो तेरे पक्का पैसे काटूंगी, तभी अकल आएगी,
अच्छा, परसों का थोड़ा चावल बचा है फ्रिज में, लेते जाना।

जी दीदी।

कल रात की किटि पार्टी ने तो पूरा ही थका दिया है मुझे,
काम निपटा ले जल्दी से, फिर थोड़ा सर मेरा दबा देना।
मेरी तो आज हिम्मत नहीं बबलू को टिफिन देने की,
उसके लिए दो चीज़ सैंडविच और जूस पैक कर देना।

जी दीदी।

अगले हफ्ते मेरी ननन्द आ रही है, कुछ दिन रहने को,
घंटाभर जल्दी आ जाया करना रोज़, बर्तन ज्यादा होंगे।
अच्छा, पुराने दो सलवार निकाले हैं, तेरी मझली के लिए,
और सुन, घर जाते जाते, कल का कचरा ज़रूर फेंक देना।

जी दीदी।

समीर खांडेकर
अक्षय तृतीया, २०१९
कानपुर